तान एवं तान के प्रकार

स्वरों को द्रुत लय तथा आकार में बोलने को तान कहते हैं। तान से गीत का विस्तार होता है तथा वैचित्र्य की सृष्टि होती है। केवल एक प्रकार की तान से इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती, अतः कई प्रकार की तानों का होना आवश्यक है, जो निम्न हैं :-

1) सपाट तान :- जिस तान में राग के स्वर क्रमानुसार हों, उसे सपाट तान कहते हैं जैसे- वृंदावनी-सारंग में निसा रेम पनि सांरें सांनि पम रेसा निसा

2) शुद्ध तान :- किसी भी राग के आरोह-अवरोह के अनुसार तान बोलने को शुद्ध तान कहते हैं, जैसे जौनपुरी राग में - सारे मप धनि सांरें सांनि धप मग रेसा। कुछ रागों में शुद्ध और सपाट तानें दोनों एक होती हैं,

Scanned with CamScanner

3) कूट तान :- जिस तान में स्वर क्रम से अर्थात सपाट न होकर टेढ़े मेढ़े हों उसे कूट तान कहते हैं, जैसे - सागरे मग रेम गमप रेग रेम गरेसा

4) मिश्र तान - शुद्ध और कूट तानों के मिश्रित रूप को मिश्र तान कहते हैं; जैसे - सारे मप धप मप, मप, मरे, मरे सान

5) अलंकारिक तान :- जब कोई तान किसी अलंकार का रूप धारण करती हो तो उसे अलंकारिक तान कहते हैं; जैसे - सारेग; रेगम; गमप; मपध, पधनि; धनिसां ।

6) छूट की तान - जब कोई तान झटके के साथ ऊपर से नीचे को आती है, अथवा नीचे से ऊपर को जाती है। जैसे - गं - गंरें सांनि धप मगरेसा

7) दानेदार तान - जिन तानों में कण का प्रयोग होता है।

8) बराबर की तान - जब कोई तान गीत के बराबर की लय में ली जाती है,

9) गमक की तान - जिनमें गमक का प्रयोग हो ।

10) लड़ंत की तान - जिस तान के बीच लय बदलती रहे लड़ंत की तान कहलाती है, उदाहरणार्थ - कभी तान दुगुन में हो, कभी तिगुन में तो कभी चौगुन में अथवा बराबर की लय आदि में। इस प्रकार की लयकारी की तानों व बोलतानों में तबला संगति की गुंजाइश रहती है।

Scanned with CamScanner

11) फिरत की तान :- जब कोई तान कुछ ही सीमित स्वर-समुदाय के अन्दर घूमती रहे तो उसे फिरत की तान कहते हैं, जैसे- गमपम, गमपप, गमपग, मपमप, गमपप, पमगम, गरेसा ।

12) जबड़े की तान :- उपर्युक्त तानों में से कोई भी तान जबड़े से उच्चारित की जाती है तो उसे जबड़े की तान कहते हैं ।

Scanned with CamScanner